जेन गुडॉल

चिम्पांज़ी विशेषज्ञ

कैथरीन क्रोहन, चित्र : सिंथिया मार्टिन

जेन गुडॉल

चिम्पांज़ी विशेषज्ञ

कैथरीन क्रोहन

चित्र : सिंथिया मार्टिन

विषयसूची

एक जिज्ञासु बच्ची

1936 में जेन गुडॉल के पिता ने उन्हें एक खिलौना चिम्पांज़ी दिया. वो स्टफ्ड खिलौना जानवर बिल्कुल जुबली चिम्पांज़ी जैसा ही दिखता था, जो पास के लंदन चिड़ियाघर में पैदा हुआ पहला चिम्पांज़ी था.

मुझे खुशी है कि तुम्हें वो पसंद आया जेन. तुम उसे जुबली बुला सकती हो, बिल्कुल चिड़ियाघर के चिम्पांज़ी की तरह.

बचपन से ही गुडॉल को जानवरों में दिलचस्पी थी. जब वो 4 साल की थी, तो वो जानना चाहती थी कि अंडे कहाँ से आते हैं.

मुर्गी में इतना बड़ा छेद कहाँ होता है कि उसमें से एक अंडा निकल सके?

अच्छा! अब मुझे समझ में आया!

घंटों के इंतजार के बाद, गुडॉल का धैर्य रंग लाया. अंत में, रहस्य का खुलासा हुआ.

मैं हिल नहीं सकती, नहीं तो मुर्गी डर जाएगी.

PLOP

गुडॉल अपने माता-पिता को यह बताने के लिए दौड़ी कि उसने मुर्गी-घर में क्या देखा था.

जेन! तुमने हमें बहुत परेशान किया. तुम कहाँ थीं?

मैं देख रही थी कि अंडे कहाँ से आते हैं, और अब मुझे पता है.

बड़ी रोमांचक खबर है. लेकिन अगली बार, कृपया हमें बताकर अपना पशु अनुसंधान करना.

गुडॉल की अफ्रीकी जानवरों में बहुत रूचि थी. उसे विशेष रूप से डॉ. डूलिटिल और टार्ज़न की किताबें पढ़ना पसंद थीं.

पक्षियों और जानवरों के बारे में छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दें - किस तरह से वे चलते हैं और अपना सिर घुमाते हैं, पंख फड़फड़ाते हैं और अपनी पूंछ हिलाते हैं.

मैं डॉ. डूलिटल जैसे ही जानवरों के साथ काम करना चाहती हूं. उन्होंने अपने अध्ययन से जानवरों के बारे में और जानकारी हासिल की.

जब वो 10 साल की थी, तब गुडॉल ने खुद से वादा किया कि वो एक दिन अफ्रीका की यात्रा ज़रूर करेगी.

मेरे दोस्त कहते हैं कि अफ्रीका बहुत डरावनी जगह है. वे कहते हैं कि मैं वहां कभी अकेले नहीं जा सकती हूँ.

उनकी बात मत सुनो, जेन. जब तुम बड़ी होगी, फिर तुम जो भी करना चाहोगी तुम ज़रूर कर पाओगी.

1952 में, गुडॉल 18 साल का हुई और उसने हाई स्कूल पास किया.

जेन, मैं तुम्हें केवल ऑफिस सेक्रेटरी वाले स्कूल में भेजने का खर्च ही उठा सकती हूं.

लेकिन फिर अफ्रीका जाने के मेरे सपने का क्या होगा?

एक अच्छी सेक्रेटरी को दुनिया में कहीं भी नौकरी मिल सकती है.

1953 में, गुडॉल ने इंग्लैंड के साउथ केंसिंग्टन में क्वीन्स सेक्रेटेरियल स्कूल में पढ़ाई की. स्नातक की डिग्री के बाद गुडॉल को लंदन में एक टाइपिस्ट की नौकरी मिल गई.

एक दिन, गुडॉल को अपनी मित्र, क्लो मांगे का एक पत्र मिला. मांगे का परिवार अफ्रीका के केन्या में बस गया था.

मैंने वर्षों से अफ्रीका जाने और अफ्रीकी जानवरों को देखने का सपना देखा था. लेकिन मैं अफ्रीका की यात्रा का खर्च कैसे उठा सकती हूं?

गुडॉल पैसे बचाने के लिए घर चली गई. अफ्रीका की अपनी यात्रा के लिए पैसे कमाने के लिए उसने एक वेट्रेस की नौकरी की.

1957 में, केन्या-कैसल जहाज पर
21 दिनों की यात्रा के बाद, गुडॉल केन्या
के बंदरगाह मोम्बासा पहुंची.
आखिरकार मैं अफ्रीका
पहुँच गई हूँ! मुझे विश्वास
नहीं हो रहा है.
इसके बाद, गुडॉल ने केन्या की राजधानी
नैरोबी के लिए दो दिवसीय ट्रेन की सवारी
की. उसने यात्रा में कई अफ्रीकी गांव और
कई जंगली जानवरों को भी देखा.
ये हाथी करीब से
कितने बड़े दिखते हैं!
NAIROBI TIMES
क्लो मांगे, नैरोबी के
रेलवे स्टेशन पर
गुडॉल को लेने आई.
वे गाड़ी से मांगे के
घर गए.
देखो वो जिराफ हम से
कितना अधिक ऊंचा है.
मुझे जंगली जानवरों के साथ
काम करना अच्छा लगेगा.

अध्याय दो

लीकी के साथ काम करना

अगले कुछ महीनों में, लीकी ने गुडऑल के काम को देखा. वो मेहनती थी और वह जानवरों की बहुत परवाह करती थीं. लीकी ने महसूस किया कि गुडॉल एक उत्कृष्ट शोधकर्ता बन सकती थीं.

जेन, हम जंगली चिम्पांज़ी के बारे में बहुत कम जानते हैं.

उनके पास पहुँचने से हमें उनसे बहुत कुछ सीखने को मिलेगा.

मैं अफ्रीका में चिम्पांज़ी अध्ययन शुरू करना चाहता हूं. क्या आप वो शोध करना चाहेंगी?

वास्तव में, तब हम जंगली चिम्पांज़ी का अध्ययन करके प्रारंभिक मनुष्यों के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं.

क्या मैं इस शोध को करने के योग्य हूँ?

मैं ऐसा व्यक्ति को चाहता हूं जो धैर्यवान हो, और जो चिम्पांज़ियों के बीच रहना चाहता हो, और जिसकी सिर्फ डिग्री में दिलचस्पी न हो. उसके लिए आप बिल्कुल फिट होंगी, जेन.

याद रखें, यह एक लंबा और कठिन काम होगा.

यह एक सपना सच होने जैसा है.

जून 1960 में, 26 वर्षीय गुडॉल ने पूर्वी-अफ्रीका के गोम्बे में चिम्पांज़ियों का अध्ययन शुरू किया. गुडॉल की मां पहले कुछ हफ्ते उसके साथ रहीं.
एक अफ्रीकी गाइड के साथ, जेन ने कासाकेला की यात्रा की, जो तांगानिका झील के बगल में एक घना पहाड़ी जंगल था.
अंत में मैं यहां आकर बहुत खुश हूं. मैं यहाँ चारों ओर घूमूंगी.
उस दिन गुडॉल और उसका गाइड चिम्पांज़ियों की तलाश करने जंगल में गए.
देखिए - यहां हाल ही में चिम्पांज़ियों ने खाना खाया है. यह पेड़ पके फलों से लदा है.
इसका मतलब है कि वे लौटकर आएंगे. चलो पास में छिपते हैं और प्रतीक्षा करते हैं.
एक घंटे बाद, गुडॉल और उसके गाइड ने चिम्पांज़ी की "पैंट-हूट" कॉल सुनी.
वे आ रहे हैं. वे चिम्पांज़ी अधिक फलों की तलाश में हैं.
दो घंटे बाद, संतुष्ट चिम्पांज़ी पेड़ पर से उतरे और फिर भाग गए.
10 दिनों तक चिम्पांज़ी पेड़ों पर वापिस लौटते रहे गुडॉल उन्हें हर दिन फल खाते हुए देखती थी.

अध्ययन के पहले कुछ महीने बहुत कठिन थे.
भागो मत! मैं तुम्हें कोई चोट नहीं पहुँचाऊँगी.
गुडॉल ने चिम्पांज़ियों को एक पहाड़ी पर खड़ी चट्टान से देखा, जिसे उसने "पीक" कहा. उसने ध्यान से उनके कार्यों और व्यवहारों को रिकॉर्ड किया. गुडॉल ने प्रत्येक चिम्पांज़ी को एक अलग नाम दिया.
महीनों तक उन्हें देखने के बाद भी फ़्लो और उसका परिवार मुझे अपने करीब नहीं आने देता है. क्या वे हमेशा मुझसे डरते रहेंगे?
रात में, गुडॉल ने अपने नोट्स एक जर्नल में कॉपी करती थी. उसने जंगल में जो कुछ भी देखा उसका विस्तृत रिकॉर्ड रखा. गुडॉल ने लीकी के साथ अपने रिकॉर्ड साझा किए. वे चाहते थे कि गुडॉल का अध्ययन चिम्पांज़ी की बुद्धिमत्ता को साबित करने वाला दुनिया का पहला अध्ययन हो.
मैंने देखा है कि चिम्पांज़ी परिवार समूहों में एक साथ यात्रा करते हैं. शिशु चिम्पांज़ी अपनी मां को कभी नहीं छोड़ते हैं.
एक साल के अध्ययन के बाद, गुडॉल इंग्लैंड लौटी. लीकी ने गुडॉल के लिए इंग्लैण्ड के कैम्ब्रिज विश्वविद्याल में पढ़ने की व्यवस्था की.
जेन, अन्य वैज्ञानिक आपके शोध पर इसलिए संदेह करेंगे क्योंकि आपके पास डिग्री नहीं है.
मैं चाहती हूं कि वैज्ञानिक मेरे काम को महत्व दें. मेरा शोध जानवरों के बारे में लोगों के सोच को बदल सकता है.
कैम्ब्रिज में, आप विज्ञान के बारे में और अधिक सीखेंगी और फिर बेहतर शोधकर्ता बनेंगी.

अध्याय 3

अद्भुत खोजें

वो एक शाखा से पत्ते
छील रहा है. चिम्पांज़ी
औज़ार बना सकते हैं!
चूंकि गुडॉल चिम्पांज़ियों को करीबी से देख पाईं इसलिए
वो उनके दैनिक जीवन के बारे में कई नई खोज पाईं.
गुडॉल ने देखा कि
डेविड ग्रे-बियर्ड दीमकों
के नाश्ते को पकड़ने के
लिए दीमक के टीले में
एक डंडी को घुसाता था.
अविश्वसनीय!
चिम्पांज़ी औजारों का उपयोग
करते हैं. किसी भी शोधकर्ता ने
इसे पहले नहीं देखा था.
प्रत्येक चिम्पांज़ी का अपना व्यक्तित्व होता है.
और इंसानों की तरह, वे भी ख़ुशी, ईर्ष्या,
उदासी और प्यार महसूस कर सकते हैं.
चिम्पांज़ी नाराज हो सकते हैं.
वे एक-दूसरे के प्रति हिंसक
भी हो सकते हैं.
WHOO-HO
WHOO-HO-AH
AH-AH-AHH
WRRAAAAW!
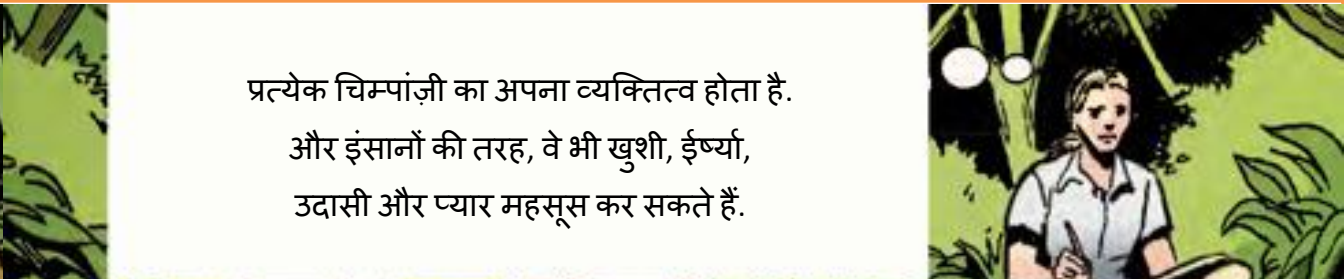
लीकी और गुडॉल ने गोम्बे में अध्ययन के बारे में लेख लिखे और भाषण दिए. नेशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी ने गुडॉल के शोध का समर्थन किया. सोसाइटी ने फोटोग्राफर ह्यूगो वैन लॉविक को अपनी पत्रिका के लिए गुडॉल और चिम्पांज़ियों के फोटोग्राफ लेने के लिए भेजा.
सोसायटी ने मदद न की होती तो मैं अपना शोध जारी नहीं रख पाती.
ये फोटोग्राफ्स दुनिया को वो काम दिखाएँगी जो आप यहाँ कर रही हैं.
गुडॉल और फोटोग्राफर ने चिम्पांज़ियों का निरीक्षण करने और उनके फोटो खींचने में घंटों बिताए.
गुडॉल और वैन लॉविक को एक-दूसरे से प्रेम हो गया और 1964 में उन्होंने शादी कर ली.
यहाँ आपके साथ रहना अद्भुत है. मुझे यह जगह बेहद पसंद है.

1965 में, गुडॉल ने "पशु व्यवहार" के अध्ययन में अपनी पढ़ाई पूरी की. लेकिन कुछ वैज्ञानिकों ने अभी भी उनके निष्कर्षों पर संदेह किया.

गोम्बे चिम्पांज़ियों का अध्ययन कर रही इस महिला के अनुसार वे गुस्सा, दुख और यहां तक कि प्यार भी दिखाते हैं. मुझे उस पर विश्वास नहीं होता. केवल मनुष्यों में ही वैसी भावनाएँ होती हैं.

स्नातक स्तर की पढ़ाई के तुरंत बाद, गुडॉल अफ्रीका लौटीं और उन्होंने गोम्बे रिसर्च सेंटर की स्थापना की. दुनिया भर से कॉलेज के छात्रों के समूह, केंद्र में चिम्पांज़ियों के जीवन का अध्ययन करने में मदद के लिए वहां आए.

कुछ वैज्ञानिक कहते हैं कि चिम्पांज़ी उतने स्मार्ट नहीं होते, जितना आप कहती हैं.

मैंने पाया है कि चिम्पांज़ी कई मायनों में इंसानों से मिलते-जुलते होते हैं. मुझे उम्मीद है कि यहां हमारे शोध से उन वैज्ञानिकों का दिमाग बदलेगा.

1967 में, गुडॉल और वैन लॉविक का एक बेटा हुआ. अगले कुछ वर्षों के दौरान, गुडॉल एक व्यस्त माँ, शिक्षक और वैज्ञानिक थीं. उन्होंने गोम्बे केंद्र में 12 छात्रों के शोध को सुपरवाइज़ किया. लेकिन दुख की बात थी कि उनके पति पूरी दुनिया में काम करते थे और वो बहुत कम ही घर आते थे.

मुझे यहां अपना काम पसंद है, लेकिन मुझे और मेरे बेटे को भी ह्यूगो की बहुत याद आती है.

गुडॉल और वैन लॉविक का एक-दूसरे से दूर रहना उनकी शादी के लिए कठिन रहा. 1974 में उनका तलाक हो गया. 1975 में, गुडॉल ने तंजानिया के राष्ट्रीय उद्यानों के निदेशक डेरेक ब्रायसन से शादी की.

अध्याय 4

अपना काम साझा करना

अफ्रीका में कई वर्षों के शोध के बाद, गुडॉल चाहती थीं कि अन्य वैज्ञानिक भी, गोम्बे के चिम्पांज़ियों का अध्ययन करें. 1977 में, उन्होंने जेन गुडॉल संस्थान की स्थापना की. आज, संस्थान उन वैज्ञानिकों को पैसा देती है जो जंगली में चिम्पांज़ियों का अध्ययन करते हैं.

वे निश्चित रूप से किशोर चिम्पांजी हैं. युवा चिम्पांजी वयस्कों की तुलना में अधिक झूलते और शाखाओं पर खेलते हैं.

देखो कैसे युवा मादा अपने छोटे भाई को संभालती है. उसने अपनी माँ को देखकर वो सीखा होगा.

गुडॉल ने लगभग 45 साल चिम्पांज़ियों के अध्ययन में बिताए. वह अक्सर भविष्य में आने वाली अपनी चिंताओं के बारे में बोलती है. वो उन शिकारियों के बारे में भी बताती हैं जो चिम्पांज़ी शिशुओं को चुराने के लिए मां चिम्पांज़ियों को, गोली मार देते हैं.

चिम्पांजी के बच्चे अक्सर चिड़ियाघरों और सर्कस को बेचे जाते हैं और यहां तक कि उन्हें पालतू जानवर के रूप में भी रखा जाता है.

अधिकांश चिम्पांजी बड़े होकर बहुत मजबूत और जंगली जानवर बनते हैं. फिर उन्हें चिकित्सा अनुसंधान प्रयोगशालाओं को बेच दिया जाता है. हमें कानूनी तौर पर चिम्पांज़ियों को इन दुर्व्यवहारों से बचाना चाहिए.

अब गुडॉल लोगों को सिखाती हैं कि वे चिम्पांज़ियों और अन्य जंगली जानवरों की कैसे मदद कर सकते हैं.
हर व्यक्ति मायने रखता है. प्रत्येक व्यक्ति की एक भूमिका होती है. प्रत्येक व्यक्ति कुछ बदलाव ला सकता है. हमारे पास एक विकल्प है; हम किस तरह का बदलाव लाना चाहते हैं?
मेरा मिशन एक ऐसी दुनिया बनाना है जहां हम प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठा सकें. क्या मैं इसे अकेले कर सकती हूँ? लेकिन युवाओं की एक पूरी फौज यह ज़रूर कर सकती है.
गुडॉल की अभूतपूर्व टिप्पणियों ने पशु वैज्ञानिकों की पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया है. उनकी खोजों ने दुनिया को चिम्पांज़ियों के बारे में एक नई समझ दी है. लोगों ने गोम्बे के चिम्पांज़ियों का अध्ययन जारी रखा है.
गुडॉल अक्सर स्कूलों में जाकर बच्चों को चिम्पांज़ियों के साथ अपने जीवन भर के काम के बारे में बताती हैं.
मेरे प्यारे पुराने दोस्त जुबली से मिलो!
मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी वही किया जो मैं अपने दिल से करना चाहती थी. मैंने अपनी ज़िंदगी जंगल में जंगली मुक्त चिम्पांज़ियों के साथ बिताई. अब वक्त है कि मैं जंगल और चिम्पांज़ियों के प्रति अपना ऋण चुकाऊं. मुझे लगता है कि मैं अपनी खोजों को अधिक-से-अधिक लोगों के साथ साझा करके यह काम सबसे अच्छी तरह कर सकती हूं.

जेन गुडॉल के बारे में

जेन गुडॉल का पूरा नाम वैलेरी जेन मॉरिस-गुडाल है. उनका जन्म 3 अप्रैल, 1934 को मोर्टिमर और मार्गरेट मॉरिस गुडॉल के घर हुआ था. उनकी बहन जूडी का जन्म 1938 में हुआ था.

मगरमच्छ, सांप और तेंदुए जैसे खतरनाक जानवर अफ्रीका में गुडॉल के आसपास रहते थे.

गुडॉल ने देखा कि चिम्पांज़ी को परिवारों के समूहों में रहते थे. जहाँ अन्य वैज्ञानिक चिम्पांज़ियों को कोई "नंबर" देते थे वहां गुडॉल ने प्रत्येक चिम्पांज़ी को एक “नाम” दिया. उन्होंने अलग-अलग परिवारों को, वर्णमाला के एक अक्षर द्वारा समूहीकृत किया. उदाहरण के लिए, फ़्लो और फ्लिंट एक ही परिवार में थे.

गुडॉल ने देखा कि कैसे चिम्पांज़ी हिंसक और आक्रामक हो सकते थे. कुछ वैज्ञानिक चाहते थे कि गुडऑल अपने निष्कर्षों को छिपाएं. वे चिंतित थे कि चिम्पांज़ियों की नई जानकारी कहीं मनुष्यों में अनुवांशिक कारणों से हिंसक व्यवहार न दिखाए. लेकिन गुडॉल ने अपने निष्कर्षों को प्रकाशित करने का फैसला किया.

जेन गुडॉल संस्थान का मुख्यालय सिल्वर स्प्रिंग्स, मैरीलैंड में है. आज संस्थान के इंग्लैंड, चीन और जापान सहित दुनिया भर में कार्यालय हैं.

गुडॉल को कई पुरस्कार मिले हैं, जिनमें क्योटो पुरस्कार, एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका अवार्ड और एनिमल वेलफेयर इंस्टीट्यूट्स अल्बर्ट श्वित्ज़र अवार्ड शामिल हैं. वो तंजानिया का सर्वोच्च पदक प्राप्त करने वाली एकमात्र गैर-तंजानियाई हैं.

गुडॉल ने नेशनल ज्योग्राफिक सहित कई पत्रिकाओं के लिए लेख लिखे हैं. उन्होंने कई किताबें भी लिखी हैं, जिनमें *रीज़न फॉर होप: ए स्पिरिचुअल जर्नी* और *द चिंपैंजी ऑफ गोम्बे: पैटर्न्स ऑफ बिहेवियर* शामिल हैं. उन्होंने युवाओं के लिए *चिंपैंजी फैमिली बुक* और *माई लाइफ विद द चिंपैंजी* जैसी किताबें भी लिखी हैं.

जेन गुडॉल संस्थान बच्चों के लिए "रूट्स एंड शूट्स" कार्यक्रम शुरू किया है. गतिविधियों में बच्चों को सभी जीवित चीजों की देखभाल सिखाने के लिए व्यावहारिक परियोजनाएं शामिल हैं.
बच्चे समूह में पेड़ लगाते हैं, कचरा उठाते हैं,
और पशु आश्रयों का समर्थन करते हैं.